आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:12-11-14

अपनी श्रीमत् से हम मनुष्यों को देवी-देवता बनाने वाले, बेहद के बाप ने कहा, मीठे बच्चे - बाबा जो तुम्हें पढ़ाते है उसे अच्छी रिति समझकर धारण करना, उनकी श्रीमत् पर चलना ही बाप का रिगार्ड रखना है.

हमारा बाबा ज्ञान का सागर हैं. उन्हें ही सारे कल्प के आदि-मध्य-अन्त का सारा ज्ञान हैं. ईश्वर को ही सत्य कहते है. बाबा ने हमें आत्मा, परमात्मा, और ड्रामा का ऐक्युरेंट ज्ञान दिया हैं. बाबा ने हमें भक्ति-मार्ग के गुह्य रहस्यों को भी बहुत क्लियर करके समझाया हैं. देवी-देवताओं के, धर्म-गुरुओं के पार्ट को भी बहुत एक्युरेंट समझाया हैं. जो मनुष्य आत्मा ने यह ज्ञान को अच्छी रिती समझा है उन्होंने ही बाप को भी समझा हैं.

बाबा हमें हर रोज मुरली में अलग-अलग श्रीमत् देते है जो शास्त्रों, धर्म-ग्रंथों या गुरुओं की मतों से बहुत अलग हैं. बाबा हमें हर बात की मत देते है उसे अच्छी तरह से समझकर, उस पर चलना और दूसरों को भी समझाकर उस पर चलने के लिए प्रोत्साहित करना ही बाप का सच्चा रिगार्ड रखना है.

आज की मुरली में कही गई कुछ श्रीमत् -

- ज्ञान-सागर बाप है. बाबा हर रोज बच्चों को समझाते हैं अर्थात आप समान बनाने का पुरुषार्थ कराते हैं. जिसे की बच्चे भी मास्टर ज्ञान-सागर बने. बाप की यह श्रीमत् पर चलना माना बाबा जो ज्ञान देते है उस पर पुरुषार्थ कर विचार-सागर-मंथन करना और अच्छे पॉइन्टस निकाल कर धारण करना.

- बाबा कहते है तुम यहॉ आये हो नर से नारायण, नारी से लक्ष्मी बनने. हम आत्माये यह ईश्वरीय ज्ञान की समझ के आधार पर ही योग, धारणा और सेवा करती है और उसमें श्रेष्ठ सफलता प्राप्त करती है. तीनों सबजेक्ट का मूल आधार ज्ञान है तो ज्ञान को ऐक्युरेंट समझने के लिए ही पहले पुरुषार्थ करना चाहिए.

- बाप कहते है - मैं तुम्हारा बाप भी हूँ, टीचर भी हूँ, सतगुरु भी हूँ. तो हमें बाबा के तीनों पार्ट को बुद्धि से समझकर, अर्थ सहित उन्हें याद करना हैं. बाबा के हरेक पार्ट में पुरा निश्चय बुद्धि होना हैं.

- बाप हर रोज मुरली में कहते है की बच्चे तुम्हारी खुशी कभी नहीं जानी चाहिए. हमारी खुशी तब जाती है जब हम अन्दर में कोई बात से दुख महसूस करते हैं. आत्मा को दुख सदा माया ही देती हैं. तो समझना चाहिए की जभी हमारी खुशी चली जाती है तो हमने माया से हार खाई हैं. खुशी तो आत्मा की अपनी मिल्कियत है उसे कोई भी कारण से गँवाना नहीं हैं.

- भगवान निराकार है. - हम भक्ति-मार्ग में जितने भी देवी-देवताओं की भक्ति करते है या अन्य धर्म वाले भी जो भी धर्म-गुरुओं को ही भगवान समझते हैं या फिर लौकिक में जो भी गुरु आदि करते है वह सब देहधारी हैं. जो भी सब देहधारी है वह सब हद के है, जब की भगवान या सुप्रीम-सोल तो सब आत्माओं से ऊंच हैं. वह निराकार है इसलिए ही बेहद का हैं. भगवान एक निराकार को ही कहते है यह हमारे में पक्का होना चाहिए.

- भगवान सर्वव्यापी नहीं है. - बाबा ने हमें बहुत क्लियर करके समझाया है की भगवान का भी नाम, रुप, काल और देश हैं. यह तो बहुत सहज बात है की अगर सब आत्माये ही परमात्मा होती तो इस संसार में इतने दुख, कष्ट, विकार नहीं होता. भगवान तो चैतन्य है तो फिर जड़ पत्थरों में कैसे हो सकता हैं.

- देही-अभिमानी, पवित्रता, निर्विकारी और वैराग्यता की धारणा पर चलना हैं. हम सब यह ईश्वरीय पढ़ाई पढ़ते है सतयुग में लक्ष्मी-नारायण जैसा देवी-देवता बनने. सतयुग में देवी-देवता सदा नेचरल रुप से देही-अभिमानी (आत्म-अभिमानी) पवित्र और निर्विकारी रहते है तो हमें ऐसा बनने के लिए हमारी आत्मा में संस्कार अभी से भरने होते हैं. अभी रावण के राज्य में रहकर हमें देही-अभिमानी स्थिति बनाने का पुरा पुरुषार्थ करना है. इसके लिए ही हमारे ब्राह्मण जीवन में सम्पूर्ण पवित्रता और सम्पूर्ण वैराग्यता को धारण करना हैं.

बाबा जो कहे उसे सुनना, मानना और ऐक्यूरेट समझकर उस पर चलना. इसको ही बाबा की श्रीमत् पर चलना कहते हैं. ॐ शांति.